स्वामी सत्यानंद

एक संक्षिप्त जीवनी

श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट
नई दिल्ली

© श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2026

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी भाग बिना श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की पूर्व लिखित अनुमति के, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकता, सिवाय उन स्थितियों के जहाँ कानून द्वारा अनुमति हो, लाइसेंस के अंतर्गत हो, या संबंधित पुनरुत्पादन अधिकार संगठन के साथ सहमति की शर्तों के अनुसार हो।

उपरोक्त सीमा से बाहर पुनरुत्पादन से संबंधित किसी भी प्रकार की पूछताछ नीचे दिए गए पते पर श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट को प्रेषित करें।

ISBN 978-93-6012-129-7 (सजिल्द)

अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट के लिए प्रकाशित

लेजर टाइपसेट: मनमोहन कुमार, दिल्ली
सजिल्द प्रकाश: रेप्लिका प्रेस प्राइवेट लिमिटेड

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट
श्रीरामशरणम्
8-ए, रिंग रोड,
लाजपत नगर-IV
नई दिल्ली, 110024

अध्याय सूची

मानचित्र और चित्रों की सूची ix

प्रस्तावना xi

आभार ज्ञापन xv

1. जन्म, परिवार और बचपन 1
2. किशोर अवस्था के आध्यात्मिक अनुभव: स्वामी जी जैन यति के रूप में 6
3. आर्य समाज में प्रवेश और संन्यास 14
4. हिमालयी प्रवास एकांतवास और अलौकिक साक्षात्कार 40
5. श्री अधिष्ठान जी की संकल्पना और महत्व 47
6. एक जानलेवा हमला 51
7. आर्य समाज से मतभेद और किनारा 57

8. स्वामी जी की मुख्य अवधारणाऐं और स्वतंत्र मार्ग की खोज 66
9. नाम-दान और साधना सत्संग 67
10. स्वामी जी के भजन और धुनें 72
11. श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना 75
12. स्वामी जी द्वारा *वाल्मीकीय रामायणसार* की रचना और उनका ग्रंथ-कोष 77
13. श्रीरामशरणम् हरिद्वार की स्थापना 81
14. पूजनीय स्वामी जी और श्री प्रेम जी महाराज 88
15. अस्वस्थता और अन्तिम दर्शन 93
16. श्रीरामशरणम् नई दिल्ली 103
17. एक अद्भुत और भव्य विरासत 107

परिशिष्ट

1. स्वामी जी द्वारा रचित ग्रन्थ 111
2. स्वामी जी के उपदेशों से अनमोल रत्न 117
3. स्वामी जी के प्रेरक प्रसंग 127

शब्दावली 136

मानचित्र और चित्रों की सूची

मानचित्र 1: स्वामीजी के जीवन से जुड़े प्रमुख स्थान 3

1. आर्य समाज, मलेरकोटला का प्रवेश द्वार 15
2. युवा स्वामी जी 20
3. स्वामी जी की सत्य उपदेशमाला का आवरण, लाहौर में मई 1916 में प्रकाशित 27
4. स्वामी जी, लगभग 1925 37
5. पालमपुर चाय बागान के गोदाम का बरामदा, जहाँ स्वामी जी टहला करते थे 41
6. बरामदे से चाय बागानों का दृश्य, पालमपुर 41
7. नॉरवुड कॉटेज, डलहौज़ी 42
8. स्वामी जी महाराज की पोटली 49
9. दयानंद मठ, दीनानगर का कॉटेज जहाँ स्वामी जी ने समय व्यतीत किया 62

10. स्वामी जी का कमंडल 62
11. पंचवटी, साधु आश्रम, होशियारपुर 63
12. स्मारक पट्टिका पंचवटी 64
13. स्वामी जी की जेब घड़ी, चेन सहित 69
14. *भक्ति प्रकाश* के प्रथम संस्करण का आवरण पृष्ठ, 1928 79
15. स्वामी जी द्वारा किसी साधक को भेंट किया गया *भक्ति प्रकाश* 80
16. श्रीरामशरणम् हरिद्वार का उद्घाटन, 25 अप्रैल 1956 82
17. स्वामी जी उद्घाटन के अवसर पर, कुठियाल परिवार के साथ 82
18. स्वामी जी, मई 1957 बायीं ओर बिशन लाल कुठियाला हैं 84
19. स्वामी जी, लगभग वर्ष 1959 में 86
20. स्वामी जी का प्रेम जी महाराज को पत्र, 6 अगस्त 1956 89
21. स्वामी जी महाराज और प्रेम जी महाराज 91
22. राम दरबार, स्वामी जी के कक्ष में, बंगलो रोड, कमला नगर, दिल्ली 94
23. स्वामी जी का कक्ष, जैसा बंगलो रोड स्थित लाला भगवानदास के निवास में था 95
24. अन्तिम यात्रा, श्रीरामशरणम् हरिद्वार से नील धारा जाते समय 100

प्रस्तावना

यह संक्षिप्त जीवनी स्वामी सत्यानंद जी महाराज, श्रीरामशरणम् के संस्थापक और अमृतवाणी के रचयिता, के जीवन यात्रा का विवरण प्रस्तुत करती है। अमृतवाणी एक दिव्य प्रार्थना और मंत्र है, जो अपनी प्रबल आध्यात्मिक प्रभावशीलता के कारण सर्वत्र लोकप्रिय हो गया है। 1868 में जन्मे पूजनीय स्वामी जी का जीवन निरन्तर और प्रबल आध्यात्मिक साधना के लिए समर्पित रहा। इस साधाना के प्रति वह अथक रूप से कई कई दशकों तक कटिबद्ध रहे। 1925 में निर्विराम और अनवरत एकांतवास के दौरान की गई साधाना के पश्चात उन्हें 'राम-नाम' के रूप में प्रकट दिव्य स्वरूप का प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त हुआ। पूजनीय स्वामी जी की जीवन यात्रा लगभग एक शताब्दी तक प्रशस्त रही। वह उस युग के साक्षी रहे, जिसमें उनके समकालीन संतों की एक दीप्तिमान श्रृंखला विद्यमान थी। इनमें स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, शिरडी के साईं बाबा, श्री अरविंद, रमण महर्षि, महात्मा गांधी

और विनोबा भावे शामिल थे। पूजनीय स्वामी जी एक सच्चे सिद्ध संत थे, जिन्होंने अपना जीवन 'राम-नाम' के दिव्य प्रसाद को अपने अनुयायियों में प्रेमपूर्वक और निःस्वार्थ रूप से बाँटने में समर्पित किया।

यह संक्षिप्त जीवनी स्वामी जी की जीवन-यात्रा को उनके प्रमुख पड़ावों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। इस पड़ाव में उनके कठिन बाल्यकाल से लेकर जैन धर्म में व्यतीत वर्षों का विवरण मिलता है। आगे चलकर स्वामी जी तीन दशकों तक आर्य समाज में एक अति सम्मानित धर्म प्रचारक और प्रवक्ता रहे। उनकी उस सेवा का उल्लेख भी यहाँ सम्मिलित है। यह पुस्तक उनके रहस्यमय आध्यात्मिक अनुभवों और संस्कृत शास्त्रों के गहन अध्ययन पर प्रकाश डालती है। यह जीवनी इस बात पर ध्यान केंद्रित करती है कि स्वामी जी ने एक विशिष्ट और अद्वितीय आध्यात्मिक मार्ग तैयार किया। यह मार्ग राम-नाम के प्रति अनन्य भक्ति और 'एक ईश्वर, एक गुरु, एक मंत्र' में दृढ़ विश्वास को प्रकट करता है। उनका दिखाया हुआ मार्ग सभी के प्रति सौहद्र, करुणा और प्रेम के कर्तव्यपरायण पथ पर चलने का संदेश देता है। इस मार्ग को उजागर करके, स्वामीजी ने कोई नया संप्रदाय स्थापित नहीं किया, अपितु उस आध्यात्मिक सार को संक्षेप में प्रस्तुत किया, जिसे आधुनिक जीवन में भी दैनिक साधना में सरलता से अपनाया जा सकता है। स्वामी जी ने सामाजिक वर्ग प्रणाली, जातियों के ऊँच नीच, स्त्री-पुरुष, आयु एवं संप्रदाय की भेदभाव को अस्वीकारा।

उन्होंने अनावश्यक रीतिरिवाज और अंधविश्वासों को नकार कर सदाचार, करुणा, प्रेम और सहनशीलता के गुणों पर बल दिया।

इस संक्षिप्त जीवनी का प्रकाशन स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा एक सामूहिक प्रयास का फल है। इसमें स्वामी जी की जीवन यात्रा और उनके उपदेशों को सरल और सुगम भाषा में प्रस्तुत किया गया है जो गहन अध्ययन और शोध पर आधारित है तथा इसका आधार केवल स्वामी जी के प्रमाणिक स्रोतों से संकलित किया गया है। इन स्रोतों में स्वामी जी के मूल पत्रा-चार, उनके द्वारा रचित ग्रंथों की पांडुलिपियाँ, अभिलेखागारों और पुस्तकालयों में उपलब्ध पुराने समाचारपत्र, पुस्तकें और पत्रिकाएँ शामिल हैं। साथ ही उन साधकों के मौखिक साक्षात्कार सम्मिलित हैं, जो सौभाग्यवश स्वामी जी के सीधे संपर्क में आए। स्वामी जी की जीवन-यात्रा से संबंधित सभी तथ्यों का सावधानीपूर्वक निरीक्षण और प्रमाणीकरण का प्रयास किया गया है। फिर भी, अनजाने में हुई किसी तथ्य या व्याख्यात्मक त्रुटि की जिम्मेदारी केवल ट्रस्ट की है।

हमें आशा है कि यह सरल और पठनीय पुस्तक युवाओं व अन्य पाठकों को स्वामी जी के प्रेरणा दायक और अनुकरणीय जीवन से परिचित कराएगी। श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा अपने श्रद्धेय संस्थापक को उनके दिव्य साक्षात्कार की शताब्दी के वर्ष 2025 के अवसर पर विनम्र श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। पुस्तक का मूल संस्करण अंग्रेज़ी में प्रकाशित

किया गया है। इसका हिन्दी अनुवाद साधकों के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके साथ ही स्वामी जी की साधना पद्धति (आत्मिक उन्नति हेतु अपनाई जाने वाली विधि) तथा उनकी गहन आध्यात्मिक साधना पर एक पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित की जाएगी।

अनिल दीवान
अध्यक्ष
श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट
श्रीरामशरणम् इंटरनेशनल सेंटर
नई दिल्ली

आभार ज्ञापन

इस संक्षिप्त जीवनी का मूल संस्करण अंग्रेज़ी में परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के दिव्य साक्षात्कार की शताब्दी पर उनके पवित्र चरणों में एक विनम्र और भावपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में प्रकाशित किया गया था। इसका हिन्दी प्रकाशन अनेक साधकों के सामूहिक प्रयास का फल है, जिन्होंने सूचना एकत्र करने, शोध करने, फ़ोटोग्राफ़ उपलब्ध कराने, अनुवाद और मसौदा तैयार करने व संपादन में सहयोग प्रदान किया।

श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट विशेष रूप से उन साधकों का ऋणी है, जिन्हें स्वामी जी के सानिध्य में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और जिन्होंने अपनी अनमोल स्मृतियाँ उदारता से सांझा कीं। स्वामी जी से जुड़े अनेक स्थानों और संस्थानों से प्राप्त जानकारी, दस्तावेज़ और फ़ोटोग्राफ़ों के लिए ट्रस्ट आभारी है। इनमें प्रधानाचार्य श्री सोहन लालजी महाराज स्मारक, अमृतसर, तथा गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार के अधिकारी सम्मिलित हैं। नेहरू मेमोरियल म्यूजियम और लाइब्रेरी, नई दिल्ली ने अपने समाचार पत्र संग्रह

की सुविधा प्रदान कर अभिलेखीय शोध में सहायता की। ट्रस्ट इन सभी संस्थाओं के सहयोग और समर्थन के लिए कृतज्ञ है और अपना आभार व्यक्त करता है।